परिचय

लेखक

गलातियों के नाम पत्री का लेखक बिना किसी गम्भीर प्रश्न के प्रेरित पौलुस ही है। 1:1 और 5:2 में उसने पत्र के अपना होने का दावा किया और उसके लेखक होने पर कोई विश्वसनीय चुनौती नहीं दी गई। दूसरी सदी ई. के आरम्भ तक गलातियों के नाम पत्र को पौलुस द्वारा लिखा ही माना जाता था।[1]

प्राप्तकर्त्ता

पौलुस ने अपने पत्र में "गलातिया की कलीसिया के नाम" (1:2) को सम्बोधित किया। नये नियम के गलातिया के लोग कौन थे इस पर बाइबल के विद्वान लम्बे समय से विभाजित रहे हैं। इस प्रश्न के सम्बन्ध में कि गलातिया के लोग कहां से आए थे, एक आम सहमति है कि वे कैल्टिक मूल के थे, जिन्हें यूनानो-रोमी लेखकों ने *कैल्टे, गलाते, या गल्ली* नाम दिए हैं। सबसे पुराने यूनानी इतिहासकारों ने उन्हें *कैल्टे* यानी कैल्ट लोग नाम दिया। वास्तव में तीसरी सदी ई. पूर्व तक साहित्य में *गलाते* या गलातियों का उल्लेख नहीं है।[2] आम तौर पर इस पर यह भी सहमति पाई जाती है कि यह गलाती लोग मूल रूप में आज के फ्रांस के इलाके से या जिसे *गल्लिया* (गाउल) उस समय का रोमी इलाका कहा जाता था, इसके निवासियों को रोमी लोग *गल्ली* कहते थे, से थे।[3] गल्ली भाषा के अवशेष आज भी पश्चिमी फ्रांस या ब्रतानवी टापुओं तथा अन्य स्थानों पर पाए जाते हैं।[4]

ये "गलाती" पश्चिमी यूरोप के अपने देश से इतनी दूर कैसे चले गए? यह एक पहेलीनुमा कहानी है जिसका सम्बन्ध लोगों या गोत्रों के प्रवास से सम्बन्धित है जो संसार के अधिकतर इलाकों में होने वाला सामान्य दृश्य। कुछ प्रवास मौसम के बदलाव, प्राकृतिक आपदाओं, आर्थिक कारणों (जैसे अधिक आबादी हो जाना) और अन्य गोत्रों या लोगों के दबाव से हो सकते हैं।

चौथी सदी ई.पू. के आरम्भ में कैल्टिक समुदाय के लोग उस प्रायद्वीप में जिसे आज इटली कहा जाता है, निकल गए। उन्होंने रोम को लूटकर नगर के कई प्राचीन स्मारकों को तथा सीमाचिह्नों को नष्ट कर दिया। बाद में 279 ई.पू. के लगभग एक और बड़ा स्थानांतरण पूर्व की ओर और फिर मकिदुनिया में से दक्षिण की ओर हुआ; इनमें से कुछ केन्द्रीय यूनान में, डैल्फी नगर के पीथियन अपोलो के प्राचीन मन्दिर तक चले गए। इस प्रवास की प्रेरणा सम्भवतया सोने, चांदी के भण्डारों तथा अन्य खजानों को लूटने से मिली थी। ये खज़ाने सदियों के मन्नतों के चढ़ावे और ट्रॉफियों के द्वारा जमा किए गए थे; उन्हें अपोलो के विभिन्न भण्डारों में रखा गया था। परन्तु प्राचीन दंतकथा के अनुसार अपोलो स्वयं मूसलाधार वर्षा, गर्ज और बिजली के साथ हस्तक्षेप करता था। इन शक्तिशाली कामों से परनासुस पर्वत से, जिसके ठीक सामने मंदिर था, गिरने वाले बड़े-बड़े पत्थर हमलावरों की मृत्यु और विनाश का कारण बनते थे जिससे यूनान

देश में बाहर से आने वाली किसी भी घुसपैठ से बचाव होता था।[5]

उत्तर में लौटने और अपने शेष मूल समूह से आनन्द करने के बाद यह गाउली एशिया माइनर में हैलेसपौंट के पार चले गए। वहां पर वे तीन मुख्य गोत्रों में उत्तर पूर्व और हैलिस नदी के पश्चिम में और उसमें जिसे जातीय गलातिया कहा गया, बस गए। यहां पर उन्होंने पैसीनुस, टेवियुम और अंकिरा (आधुनिक अंकारा) नामक तीन मुख्य नगर बसाये। इनमें से अन्तिम नगर अंत में पूरे गलातिया की राजधानी बन गया।[6]

जातीय गलाती लोग वास्तव में पूरे एशिया माइनर के लिए आतंक बन गए। उनके शत्रु नगर के फाटकों तक पहुंच जाते और वहां के लोगों को भेंट देने या दुखदायी विनाश देने के दुख देने वाला विकल्प देते थे। 230 ई.पू. से पहले जब तक परगमुम (या परगामोम) के राजा अत्तलुस प्रथम ने मैदान लेकर उन्हें पराजित नहीं किया, इलाके पर उनका अत्याचार बंद नहीं हुआ था। आज इस परगमीनी विजय का एक स्मारक उस लड़ी की शोभा बढ़ातीं संगमरमर की बड़ी बड़ी मूर्तियां हैं, जो किसी जमाने की ज्यूस की परगमोम वेदी 446 फुट लम्बे आधार वाली थीं। जर्मन पुरातत्विदों ने इस वेदी का हिस्सा बर्लिन में ले जाकर, इसे फिर से बनाया, और प्रसिद्ध परगामोम अजायबघर का आकर्षण बना दिया। अंत में कैल्टिक गोत्र उस समय के फैलते हुए यूनानीवाद में दब गए, अपने आस पास के अधिकतर लोगों की तरह, और भाषा तथा संस्कृति में यूनानी ही बन गए।

क्या पौलुस ने गलातियों के नाम अपना पत्र उत्तर के इन जातीय गलातियों के नाम लिखा या उसने गलातिया के अधिकत विस्तृत रोमी इलाके की कुछ कलीसियाओं को सम्बोधित किया?[7] इस बात पर विद्वान दो मुख्य खेमों में बंट जाते हैं। एक समूह उसे मान लेता है जिसे "नॉर्थ गलेशियन थ्यौरी" माना जाता है, इस विचार को अधिकतर जर्मन थियोलॉजियनों तथा अधिक उदार विद्वानों द्वारा माना जाता है। दूसरा विचार जिसे आम तौर पर अधिकतर ब्रतानवी और अमरीकी विद्वान मानते हैं साउथ गलेशियन थ्यौरी, यह सुझाव देता है कि गलातियों का पत्र उन कलीसियाओं के नाम था जिनका नाम प्रेरितों की काम पुस्तक में लूका ने लिया। ये कलीयिसाएं पौलुस तथा उसके साथी मिशनरियों द्वारा अपनी पहली मिशनरी यात्रा के दौरान स्थापित की गई थीं (प्रेरितों 13; 14)। खासकर ये कलीसियाएं अंताकिया, इकोनियुम, लुस्त्रा और दिरबे में थीं, जो सब की सब गलातिया के रोमी साम्राज्य के दक्षिणी भाग में थीं।

प्रेरितों के काम में दर्ज पौलुस तथा उसके सहकर्मी मिशनरियों के सम्बन्ध में पैसिनुस, तेवियुम या अंकिरा के उत्तर गलाती नगरों में से किसी में कोई विशेष संदर्भ नहीं मिलता। वास्तव में नये नियम में इन में से किसी नगर का उल्लेख नहीं है। "नॉर्थ गलेशियन थ्यौरी" के प्रस्तावक अपने विचार के आधार के लिए जो भी कहें, सच्चाई यह है कि ऐसा कोई पक्का प्रमाण नहीं है कि पौलुस या उसके सहकर्मी इन नगरों में कभी गए होंगे। यदि ऐसा है तो "नॉर्थ गलेशियन थ्यौरी" किस प्रमाण पर आधारित है?

द नॉर्थ गलेशियन थ्यौरी

वर्नर जॉर्ज क्युमल ने अनुमान लगाया कि 3:1 में "हे निर्बुद्धि गलातियो" की पौलुस की डांट उन्हीं की पहचान कराती है जो गलातिया जिले में रहते थे, उन्हें अपने आस पास के

गलातिया के विशाल साम्राज्य के दक्षिणी इलाकों में रहने वाले लुकाउनियों और पिसिदियों नामक लोगों से अलग करता है। क्युमल ने उत्तर में जातीय गलातियों की विशिष्ट पहचान के रूप में जातीय गलातियों और उनके आस पास के पड़ोसियों में अंतर दिखाने के लिए प्रेरितों के काम पुस्तक में लूका के बहुभाषी उपयोग और उस समय के समकालीन लेखकों की प्रवृति का हवाला दिया।[8]

क्युमल ने जातीय गलातियों और दक्षिणी गोत्रों के बीच पौलुस की सोच के एक अंतर के संकेत के रूप में गलातियों के आरम्भ[9] में संकेत दिया कि पौलुस यदि अपनी पत्री में उन्हें सम्बोधित कर रहा होता तो उसने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में अपने अभिवादन में दक्षिणी गलातिया (लुकाउनिया और पिसिदिया) के इलाकों के हवाले शामिल किए होने थे।[10]

जे. बी. लाइटफुट ने प्रेरितों 14:6 में लुस्त्रा और दिरबे के ''लुकाउनिया के नगरों'' (गलातिया के नहीं) के लूका के अंतर पर ज़ोर देते हुए और यह दावा करके कि लूका ने अपने समय की समकालीन भाषा का इस्तेमाल करते हुए नारदर्न थ्यौरी का समर्थन किया।[11] यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि इस विचार का लाइटफुट का समर्थन तब आया जब सदर्न थ्यौरी का आधार अभी बनाया जा रहा था।

आरम्भिक मसीही इतिहास की व्याख्या में सर्वश्रेष्ठ जर्मनी विद्वानों में से एक फर्डिनैंड क्रिश्चियन बाउर ने सुझाव दिया कि गलातियों के पत्र के श्रोताओं में जातीय गलाती लोग शुमार थे। परन्तु बाउर ने वास्तव में स्वयं को इस विषय के अधिकारी के रूप में अयोग्य बना दिया। उसने यहूदीवादी और यूनानी मसीहियों के बीच ''असहमति के प्रमाण को दूर करने के बाद के प्रयास'' के रूप में प्रेरितों के काम की पुस्तक के अधिकार को नकार दिया, ''ताकि कलीसिया की एकता बरकरार रखी जा सके।''[12] यह ध्यान देना भी दिलचस्प है कि बाउर ने उन मार्गों की खोज व्यक्तिगत रूप में किए बिना निष्कर्ष निकाले जिन पर पौलुस और उसके साथी घूमे होंगे।

द साउथ गलेशियन थ्यौरी

''साउथ गलेशियन थ्यौरी'' चाहे विलियम एम. रैमसे (1851–1939) के समय से पहले प्रस्तावित की गई थी पर एशिया माइनर के स्वयं जाकर सर्वेक्षणों के अपने ज़मीनी कार्य और क्लासिकल साहित्य के अपने विस्तृत अध्ययन के कारण प्रसिद्ध वही है। रैमसे ने आरम्भ में नारदर्न थ्यौरी तथा पौलुस की सेवकाई के कालक्रम के बाउर के विचार को मान लिया। बाद में उसने अपनी खोजों के महत्व के कारण अपने प्रोफेसर के विचारों को नकार दिया। इस बड़ी खोज के बाद रैमसे साउथ गलेशियन दृष्टिकोण का कट्टर समर्थक बन गया।

रैमसे ने अपनी खोज का आरम्भ इस चिंता के साथ किया था कि पत्री के टीकाकार ''पहले से तय कर लेने के कारण कि पौलुस ने उत्तरी कलीसियाओं के नाम लिखा''[13] इस मुद्दे के ऐतिहासिक पहलू की खोज करने के लिए तैयार नहीं थे। इसके बजाय वे जल्दबाजी में कुछ तथ्यों को चुन लेते जो उनके पुराने निष्कर्षों से मेल खाते थे। उसने ''गलातिया को यह दिखाने के लिए कि यह सचमुच में 50 ई. की ही बात है'' कोशिश की।[14]

साउथ गलेशियन थ्यौरी के समर्थन में रखे जा सकने वाले कई बिंदुओं में, कुछ ध्यान देने योग्य इस प्रकार हैं।

पौलुस की सेवकाई के समय के दौरान जातीय गलातियों का इलाका दक्षिणी इलाके जितना विकसित नहीं था। दक्षिण के नगरों में से व्यापार संतुलित रूप में चल रहा था जबकि उत्तरी जिले के मैदानी इलाकों में से नहीं।[15]

रोमी प्रदेश के मुख्य मार्गों के साथ साथ जाने की पौलुस की प्रवृति एशिया माइनर में मसीहियत के प्रसार के ढंग से मेल खाती है। एक तो उस मार्ग के साथ साथ था जो उत्तर में सीरिया से, किलकिया के फाटकों से होते हुए पश्चिम की ओर इकुनियुम तक और इफिसुस को जाता था। अन्य दो मुख्य लाइनों में एक फिलाडैल्फिया से त्रोआस तक ज़मीनी मार्ग पर थी और दूसरी किलकिया के फाटकों के आगे तियाना और कैसरिया (कप्पदूकिया में) से उत्तर की ओर काले सागर की बंद्रगाह अमिसोस (आज के सैमसन) तक जाती थीं।[16] एक बात जो उत्तरी थ्यौरी के पक्ष में नहीं है, इनमें से कोई भी लाइन जातीय गलाती जिले में से होकर नहीं जाती थी।

पत्र में पौलुस ने गलातियों के लिए तीन बार बरनबास का नाम ऐसे लिया (2:1, 9, 13) जैसे वे उससे परिचित हों। यह उनकी पहली मिशनरी यात्रा के विवरण से मेल खाता है (प्रेरितों 13; 14), जिसमें लूका ने लिखा कि दक्षिणी इलाकों में कलीसियाओं की स्थापना करते हुए बरनबास पौलुस के साथ था। बाद में यूहन्ना जो मरकुस कहलाता है के कारण झगड़ा हो जाने के बाद बरनबास और पौलुस अलग अलग दिशाओं में चले गए (प्रेरितों 15:36–41)। जिस कारण बरनबास पौलुस की दूसरी और तीसरी मिशनरी यात्राओं पर उसके साथ नहीं था (प्रेरितों 16:1—21:16)।[17] यदि पौलुस उत्तरी गलातिया में गया भी होगा तो भी बनरनबास उसके साथ नहीं होगा। इसलिए वह जातीय गलातियों को व्यक्तिगत रूप से नहीं जानता होगा।

''गलातियो'' (3:1) उन्हें सम्बोधित करने के लिए, जिन्हें वह लिख रहा होगा पौलुस द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला विस्तृत शब्द था (पिसिदिया के अंताकिया, लुस्त्रा, इकुनियुम और दिरबे के लोगों को)।[18] संदेश विशेष रूप से जातीय गलातियों के लोगों के लिए ही नहीं था। 232 ई.पू. तक गलातिया राज्य के लोगों को माना जाता था कि उन्होंने फ्रूगियों के साथ-साथ गाउली लोगों को भी दास बनाया था। आक्रमणकारियों के विरुद्ध सहयोग के लिए विवश होने पर लोगों के इन दो अलग अलग समूहों को उनके शत्रु (और बाद में इतिहासकार) उनके खूनी रिश्ते के विशेष संदर्भ के बिना कि वे गाउली थे या फ्रूगी वंश के, गलातिया के लोग या केवल गलाते के रूप में देखते थे।[19]

यह ध्यान देने योग्य है कि लूका ने जो कि एक यूनानी था, ''गलातिया प्रदेश'' की बात की (प्रेरितों 16:6; 18:23), जबकि अपने विचार में अधिक रोमी होने के कारण पौलुस ने उन्हें केवल ''गलातियो'' कहा। यदि पौलुस के मन में उनकी बात करते समय जातीय गलाती थे (गलातियों 3:1), और लूका उसी जिले की बात कर रहा था, तो लूका ने ''गलातिया प्रदेश'' के बजाय, ''गलातियो'' का वही संदर्भ क्यों नहीं इस्तेमाल किया? रैमसे की खोज से पता चला कि यूनानी और लातीनी लेखक जातीय क्षेत्र का इस्तेमाल ''गलातिया प्रदेश'' या ''गलातिया का इलाका'' के रूप में नहीं बल्कि हर जगह ''गलातियो'' के रूप में करते थे। (रैमसे के अवलोकन से) पौलुस और लूका दक्षिणी गलातिया के इलाके की बात कर रहे थे, इसलिए लूका ने सारे गलातिया प्रदेश में जितने भी इलाके थे उनका संदर्भ देते हुए यूनानी शैली का अनुसरण किया।[20]

साउथ गलेशियन थ्यौरी के पक्ष में सबसे मज़बूत बिंदू और नॉर्थ गलेशियन थ्यौरी में सबसे

बड़ी रूकावट उस काल के पुरातत्व और साहित्य की खामोशी है। कहीं पर भी उन कलीसियाओं का कोई उल्लेख नहीं मिलता जिन्हें पौलुस ने गलातिया जिले में स्थापित किया होगा। (1) प्रेरितों के काम पुस्तक किसी भी उत्तरी कलीसिया के बारे में खामोश है, जबकि लूका ने विशाल गलातिया प्रदेश में कलीसियाओं की स्थापना की बात की है। (2) पौलुस के उत्तरी जिले में जाने का कोई उल्लेख नहीं है। इसका अर्थ यह नहीं है कि वह कभी गया नहीं, परन्तु उसकी किसी भी यात्रा का रिकॉर्ड नहीं मिलता। (3) ऐसा कोई रिकॉर्ड नहीं मिलता कि पहली सदी में उत्तरी गलातिया की कलीसिया का अस्तित्व था।

प्रमाण इस निष्कर्ष पर पहुंचाता है कि गलातिया के लोग जिन्हें पौलुस ने अपने पत्र में सम्बोधित किया वही गलाती लोग थे जिनके बीच में पौलुस और बरनबास ने परिश्रम किया था। विशेषकर इस शब्द में वे मसीही लोग शामिल हैं जो पिसिदिया के अंताकिया, इकुनियुम, लुस्त्रा और दिरबा नगरों में रहते थे-इन जगहों का नाम लूका के प्रेरितों के काम की पुस्तक के विवरण में मिलता है।

आरम्भ का समय और स्थान

गलातियों के पत्र के लिखे जाने का समय तय कर पाना कठिन है और इसी के साथ ही पौलुस के भावी श्रोता भी जुड़े हुए हैं। स्पष्टतया उसके मूल पाठक गलातिया के विशाल रोमी प्रदेश की कलीसियाओं के सदस्य थे (साउथ गलेशियन थ्यौरी) न कि जातीय गलाती जिले (नॉर्थ गलेशियन थ्यौरी) के।

अलग-अलग विद्वानों द्वारा गलातियों के लिखे जाने की 48 ई. से 63 ई. के बीच कई तिथियां सुझाई गई हैं। रॉबर्ट एच. जॉनसन ने सुझाई गई तिथियां तथा आरम्भ के स्थान की यह सूची बनाई है:

1. अंताकिया (सीरिया) में, 48-49 ई., पहली मिशनरी यात्रा के तुरन्त बाद और यरूशलेम की सभा से पहले (प्रेरितों 15)।
2. अंताकिया (सीरिया) में, 49-50 ई., यरूशलेम की सभा के तुरन्त बाद (प्रेरितों 15)।
3. कुरिन्थुस में, 52-54 ई., दूसरी मिशनरी यात्रा के अंत के निकट।
4. अंताकिया (सीरिया) में, दूसरी मिशनरी यात्रा के बाद।
5. इफिसुस में, पौलुस के अपनी तीसरी मिशनरी यात्रा पर वहां पहुंचने के थोड़ी देर बाद, या उसके मकिदुनिया में जाने के लिए इफिसुस से निकलने से थोड़ा पहले, 55-57 ई.।
6. तीसरी यात्रा पर मकिदुनिया से, 56-57 ई.।
7. रोमियों के लिखने से थोड़ा पहले तीसरी यात्रा पर कुरिन्थुस से, 57-58 ई.।
8. सम्भावना (बहुत कम) कि गलातियो रोम से लिखी एक और जेल की पत्री थी, 61-63 ई.।[21]

बाद की तिथि के लिए चाहे अच्छे तर्क दिए जा सकते हैं,[22] परन्तु यह पत्र सम्भवतया इससे पहले लगभग 48-49 ई. के आस-पास गलातियो की कलीसियाओं के नाम लिखा गया। यह

बात इसके लिखे जाने के समय को पहली मिशनरी यात्रा के पूरा होने के थोड़ा बाद जब पौलुस अभी सीरिया के अंताकिया में था (प्रेरितों 14:26-28), और यरूशलेम की सभा में भाग लेने के लिए बरनबास के साथ उसके जाने से थोड़ा पहले (प्रेरितों 15:1-29) रखेगी।

दो बातें इस पत्र के पहले लिखे जाने की तिथि पर वज़न डालती हैं। (1) इसमें यरूशलेम की सभा का कोई उल्लेख नहीं है,[23] जिसका उद्देश्य ही खतने के मुद्दे पर निर्णय देना था। (2) पौलुस की दूसरी मिशनरी यात्रा में सभा के आदेशों को आगे सौंपना शामिल था (प्रेरितों 16:4)। यह अटपटा सा लगता है कि पौलुस की पत्री यरूशलेम की सभा के बाद लिखी जाती, सभा से आदेश प्राप्त करने के और अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा के दौरान विभिन्न कलीसियाओं में उन निर्णयों को बताने के बाद पौलुस अपनी पत्री में उन आदेशों को न बताता।

यह तथ्य कि प्रेरितों तथा प्राचीनों की ओर से यरूशलेम का पत्र अंताकिया, सीरिया और किलिकिया के भाइयों के नाम था (प्रेरितों 15:23), केवल इस बात का संकेत है कि वे उन इलाकों को जवाब दे रहे थे जहां झगड़ा शुरू हुआ था। यह मान लेना बेबुनियाद है कि खतने का झगड़ा गलातिया में नहीं उठा था या यह कि यरूशलेम की सभा से पहले पौलुस ने अपने पत्र के द्वारा इस पर पहले ही बात नहीं की थी। पौलुस की कठोर डांट के साथ-साथ पतरस, बरनबास और सीरिया के अंताकिया के यहूदियों की कायरता के हवाले इस पत्र के लिखने के समय प्रेरित के मन में अभी ताजा ही थे (गलातियों 2:11, 12)।

इसका निष्कर्ष सम्भवतया यह है कि पौलुस ने गलातियों का पत्र इससे पहले, यानी लगभग 48-49 ई. में सीरिया के अंताकिया से ही लिखा।

अवसर और उद्देश्य

जैसे लूका के विवरण में बताया गया है, पौलुस और बरनबास गलातिया प्रदेश में मसीहा की प्रायश्चित वाली मृत्यु तथा पुनरुत्थान के शुभ समाचार का प्रचार करने के लिए आए थे (प्रेरितों 13:23-41; देखें गलातियों 1:1, 4; 3:1)। इन मिशनरियों ने इस बात पर जोर दिया कि यीशु में विश्वास के द्वारा, पाप से मुक्त हुआ जा सकता है, जो कि मूसा की व्यवस्था के द्वारा सम्भव नहीं था (प्रेरितों 13:39)।

गलातिया के विश्वासियों में यहूदी या यहूदी मत धारण करने वाले काफी लोग थे (प्रेरितों 13:43; 14:1)। इन यहूदियों का एक लम्बा और गौरवमय इतिहास था। "महिमा और वाचाएं और व्यवस्था और उपासना और प्रतिक्रियाएं उन्हीं की" थीं (रोमियों 9:4)। उनके पास सुलैमान के भव्य मन्दिर और हेरोदेस द्वारा पुन: निर्मित मन्दिर की यादों के साथ साथ भविष्यवक्ताओं और राजाओं की विरासत थी। उनके पास अपनी यहूदी विरासत और विश्वास का प्रतीक खतने की रीति भी थी। वे परमेश्वर के चुने हुए लोग इस्राएली थे।

इस धार्मिक संस्कृति में बहुत से अन्यजाति विश्वासियों को कलीसिया में मिलाया गया था (गलातियों 4:8, 9; प्रेरितों 13:48; 14:1)। यहूदी मसीहियों की तरह उनका विश्वास मसीह में था और उन्हें उस में बपतिस्मा दिया गया था (3:26, 27)। इसके अलावा उन्हें पवित्र आत्मा के आश्चर्यकर्म के दान मिले थे (3:5)। कुछ समय तक वे यीशु में अपने विश्वास में बढ़ते हुए परमेश्वर के अनुग्रह में बने रहे। उनकी आत्मिक उन्नति में सहायता के लिए इन मण्डलियों में

ऐल्डर तक नियुक्त कर दिए गए थे (प्रेरितों 14:23)।

पौलुस के जाने के बाद कुछ यहूदी मसीही[24] गलातिया में आकर "और ही प्रकार के सुसमाचार" का प्रचार कर रहे थे जो वास्तव में "सुसमाचार" था ही नहीं (गलातियों 1:6, 7)। ये झूठे शिक्षक इस बात का दावा कर रहे थे कि उद्धार पाने के लिए यीशु में विश्वास और उसमें बपतिस्मा लेने के अलावा (3:27), मूसा की व्यवस्था को मानना भी आवश्यक है (4:21; 5:1; प्रेरितों 15:1)। वे नये विश्वासियों पर खतना (5:2) और पर्वों को मनाए जाने (4:10) जैसे काम थोप रहे थे। ये लोग अपनी झूठी शिक्षा से मण्डलियों को परेशान कर रहे थे, और मतभेद फैला रहे थे (5:10, 12)। वे पौलुस के प्रेरित होने और व्यवस्था मुक्त सुसमाचार को जिसका वह प्रचार करता था, भी गलत बता रहे थे (1:11—2:21)।

इन यहूदी मत की शिक्षा देने वालों की सम्भावित प्रेरणाएं तिहरी हो सकती हैं। पहली बात, उन्हें लगता था कि मसीही बनने के लिए यहूदी होना आवश्यक है (प्रेरितों 15:1)। उन्हें इस बात की समझ नहीं आई कि बिना यहूदी बने यहूदी मसीहा का अनुसरण कैसे कर सकता है। इसके अलावा वे व्यवस्था को अन्यजाति मसीहियों के लिए जो अभी अभी मूर्तिपूजा में से निकले थे सुरक्षात्मक महत्व वाली मानते थे। इसके अलावा उनके कई साथी यहूदी पौलुस और बरनबास के प्रचार को मानने से इनकार करते थे; इनमें से कई तो मसीही लोगों को सताते भी थे (प्रेरितों 13:45-50)। यहूदी मत की शिक्षा देने वालों को लगता था कि अन्यजाति विश्वासियों को खतना करवाकर यहूदी मत में मिलाने से कलीसिया के विरुद्ध अविश्वासी यहूदियों की शत्रुता कम हो जाएगी (गलातियों 6:12)। उनकी प्रेरणा जो भी रही हो परन्तु पौलुस ने उनकी बात का ज़ोरदार ढंग से विरोध किया (1:8, 9; 5:12)।

गलातियों के नाम लिखने का पौलुस का उद्देश्य यहूदी मत की शिक्षा देने वालों की झूठी शिक्षा का सामना करना था। उसने यहूदी मसीहियों से कहा कि उद्धार के माध्यम के रूप में व्यवस्था को मानने पर भरोसा न रखें (3:10)। इसके अलावा उसने उन्हें अन्यजाति मसीहियों पर अपनी परम्पराओं को न थोपने का भी निर्देश दिया। पौलुस ने इन सब को मूसा की व्यवस्था की दासता से आगे बढ़ने और यह मान लेने का सुझाव दिया कि वे मसीह में हो सकते हैं: "अब न कोई यहूदी रहा और न यूनानी, न कोई दास न स्वतन्त्र, न कोई नर न नारी, क्योंकि तुम सब मसीह यीशु में एक हो" (3:28)।

रूपरेखा

I. आरम्भिक अभिवादन (1:1-5)

II. किसी और सुसमाचार के लिए पौलुस का विरोध (1:6-10)

- क. किसी और सुसमाचार को सुनाने वालों की पौलुस की निंदा (1:6-9)
- ख. पौलुस की इच्छा मनुष्यों को नहीं, परमेश्वर को प्रसन्न करने की (1:10)

III. मसीह के सुसमाचार का पौलुस का आत्मकथा रूप में बचाव (1:11—2:21)

- क. पौलुस की ईश्वरीय बुलाहट और प्रारम्भिक सेवकाई (1:11-24)
  1. प्रकाशन के द्वारा प्राप्त हुआ सुसमाचार (1:11, 12)
  2. सुसमाचार की बदलने वाली सामर्थ: सताने वाले से प्रचारक (1:13-17)

3. पौलुस द्वारा बताया गया सुसमाचार दूसरों पर निर्भर नहीं (1:18-24)

ख. यरूशलेम के दिग्गजों से पौलुस की मुलाकात (2:1-10)

ग. पतरस के साथ पौलुस का सामना (2:11-21)

1. अन्यजातियों को यहूदियों की तरह रहने के लिए विवश करना (2:11-14)
2. मसीह में विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जाना (2:15-21)

IV. मसीह के सुसमाचार का पौलुस का प्रयोगात्मक और वचन के अनुसार बचाव (3:1—5:1)

क. विश्वास के द्वारा प्राप्त हुआ पवित्र आत्मा (3:1-5)

ख. अब्राहम की धार्मिकता विश्वास के द्वारा प्राप्त हुई (3:6-9)

ग. यहूदियों के ऊपर व्यवस्था का श्राप (3:10-14)

घ. अब्राहम से प्रतिज्ञा व्यवस्था से पहले की गई (3:15-18)

ङ व्यवस्था की अपर्याप्तता (3:19-22)

च. व्यवस्था का अस्थाई होना (3:23—4:7)

1. मसीह तक पहुंचाने वाला शिक्षक (3:23-29)
2. दास्तव से पुत्र तक (4:1-7)

छ. पौलुस की व्यक्तिगत विनती (4:8-20)

1. गलातियों का आत्मिक दासत्व में लौटना (4:8-11)
2. गलातियों के व्यवहार पर पौलुस की परेशानी (4:12-20)

ज. हाजिरा और सारा का दृष्टांत (4:21—5:1)

V. मसीही चलन (5:2—6:10)

क. मसीह में स्वतन्त्रता (5:2-15)

1. व्यवस्था बनाम मसीह (5:2-6)
2. गलातियों की गलती (5:7-9)
3. प्रेरित का उत्तर (5:10-12)
4. "स्वतन्त्रता के लिए बुलाए गए" (5:13-15)

ख. आत्मा के अनुसार चलना (5:16-26)

1. आत्मा बनाम शरीर (5:16-18)
2. "शरीर के काम" (5:19-21)
3. "आत्मा का फल" (5:22, 23)
4. शरीर पर आत्मा की विजय (5:24, 25)
5. भाइयों को प्रेरित की ताड़ना (5:26)

ग. एक दूसरे का भार उठाना (6:1-10)

VI. अंतिम टिप्पणियां (6:11-18)

टिप्पणियां

[1]एफ. एफ. ब्रूस, द *एपिस्टल टू द गलेशियंस,* द इंटरनैशनल ग्रीक टैस्टामेंट कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1982), 1. [2]जे. बी. लाइटफुट, द *एपिस्टल ऑफ सेंट पॉल टू द गलेशियंस,* क्लासिक कमैंट्री लाइब्रेरी (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1957), 2. [3]वहीं, 2-3. [4]लोग आज भी ''गल्ली स्वभाव'' या ''गल्ली मिजाज़'' की बात करते हैं, चाहे वे इस बात से अनभिज्ञ हों कि वे संप्रदायों की एक शाखा की बात कर रहे होते हैं। [5]पाउसेनियास *डिस्क्रिप्शन ऑफ ग्रीस* 10.19.5-10.23.14. [6]लाइटफुट, 6. [7]गलातिया के रोमी प्रांत की सही-सही सीमाओं के संबंध में चाहे काफी अनिश्चितता पाई जाती है परन्तु नक्शे में यह देख पाना कठिन नहीं है कि ये तिरछे रूप में काले सागर के दक्षिण पूर्वी तटों से होते हुए दक्षिण केंद्रीय अनातोलिया में पम्फूलिया की तंग पट्टी तक फैला था जहां अतल्लिया और पिरगे नगर बसे हुए थे। उदाहरण के लिए द *NIV स्टडी बाइबल,* संपा. कैनथ बार्कर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1985) में देखें ''मैप 11: पॉल'स मिशनरी जरनीस।'' गलातिया को पम्फूलिया लगभग तीस मील की दूरी से भूमध्य सागर से अलग करता था। [8]वर्नर जॉर्ज कुमल, *इंट्रोडक्शन टू द न्यू टैस्टामेंट,* संशो. संस्क., अनु. हावर्ड क्लार्क की (नैशविल्ल: अबिंग्डन प्रैस, 1975), 297-98. देखें प्रेरितों 14:6, 24, जहां विशेष रूप से गलातिया के प्रांत के दक्षिणी इलाके की बात की गई है। [9]1:21 में पौलुस ने लिखा ''इसके बाद मैं सीरिया के किलिकिया के प्रांतों में आया।'' [10]कुमल, 298.

[11]लाइटफुट, 19-20. [12]मैरिल सी. टैनी, *गलेशियंस: द चार्टर ऑफ क्रिश्चियन लिबर्टी,* संशो. संस्क. (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1966), 16. [13]विलियम एम. रैमसे, *ए हिस्टोरिकल कमैंट्री ऑन सेंट पाल'स एपिस्टल टू द गलेशियंस,* लिमिटेड क्लासिकल रिप्रिंट लाइब्रेरी (मिनियापोलिस: क्लॉक एंड क्लॉक क्रिश्चियन पब्लिशर्स, 1978), 3. [14]वहीं, 6. [15]लियोन मौरिस, *गलेशियंस: पाल'स चार्टर ऑफ क्रिश्चियन फ्रीडम* (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1996), 17. [16]ब्रूस, 9. [17]पौलुस ने अपनी तीसरी यात्रा पर जब 1 कुरिन्थियों लिखा तो बरनबास का उल्लेख किया (1 कुरिन्थियों 9:6)। हो सकता है कि प्रेरित केवल उसी की बात कर रहा हो जो कुरिन्थियों ने बरनबास के बारे में सुन रखा था न कि उसकी कि वह उनके नगर में पौलुस के साथ था। [18]रैमसे ने लिखा है कि दूसरी शताब्दी ,ई.पू. तक पूरे प्रांत को गलातिया ही माना जाता था। बेशक इसके आधे से अधिक निवासी गाउली वंश के नहीं बल्कि फ्रूगी वंश के थे, परन्तु उन्हें गलाती ही कहा जाता था। (रैमसे, 84.) [19]वहीं, 79-81. [20]वहीं, 314-15.

[21]रॉबर्ट एल. जॉनसन, द *लैटर ऑफ पॉल टू द गलेशियंस,* द लिविंग वर्ड कमैंट्री (आस्टिन, टैक्सस: आर. बी. स्वीट कं., 1969), 25-26. [22]जॉनसन से इस विषय पर व्यापक चर्चा की पेशकश की (वहीं, 16-26)। यह सुझाव देते हुए कि गलातियों की दूसरी मिशनरी यात्रा के बाद (अंताकिया से) या तीसरी मिशनरी यात्रा पर (इफिसुस, मकिदुनिया या कुरिन्थिस से) लिखा हो सकता है, उसने 55 ई. से 57 ई. के बाद की तिथि का समर्थन किया। [23]इसका अर्थ यह हुआ कि गलातियों 2:1-10 में यरूशलेम में जाना प्रेरितों 11:27-30 में अकाल राहत के लिए जाना ही था (2:1 पर टिप्पणियां देखें)। [24]ये लोग यरूशलेम की कलीसिया से आए हुए हो सकते हैं, यह अलग बात है कि उन्हें प्रेरितों या वहां के प्राचीनों की ओर से नहीं भेजा गया होगा (प्रेरितों 15:23, 24)।